ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 2, Issue- 2, April-June 2026 ISSN (O)- 3107-9679

Email id: editor@researchprojournal.com Website- www.researchprojournal.com

भारत में वृद्ध महिलाओं की परिवारिक भूमिका एवं सामाजिक स्थिति का विश्लेषण

कल्पना पटेल

समाजशास्त्र विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

Article Info: *(Recieved- 05/01/2026, Accept- 02/02/2026, Published- 03/04/2026)*

DOI- 10.70650/rpimj.2026v2i200002

सार

वृद्धावस्था एक सहज प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह एक जटिल और चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है। आधुनिक औद्योगिक समाज में वृद्धों को इस अवस्था में अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ये समस्याएँ विशेषतः आर्थिक असुरक्षा, शारीरिक कमजोरी, खाली समय का उचित प्रबंधन तथा सामाजिक अकेलापन से संबंधित होती हैं। जब वृद्ध व्यक्ति इन समस्याओं का समाधान ढूढ़ने में असफल रहते हैं, तो उनके जीवन में आदर्श, सुरक्षा और सामाजिक सहयोग की कमी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। परिवार और समाज में भी वद्धों की देखभाल को बोझ समझने की प्रवत्ति बढ़ रही है, जिसके कारण उनकी देखरेख करने वाले परिवारों में गिरावट देखी जा रही है। इस प्रकार, वृद्धावस्था से जुड़ी समस्याओं का समुचित समाधान नहीं हो पाने के कारण यह मुद्दा एक महत्वपूर्ण सामाजिक चुनौती के रूप में उभर रहा है। इस पत्र के अन्तर्गत भारत में वृद्ध महिलाओं की परिवारिक भूमिका एवं सामाजिक स्थिति का विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य–शब्दः वृद्धावस्था; परिवारिक भूमिका ; सामाजिक स्थिति।

परिचय

युग तेजी से करवट बदल रहा है। परिणामतः जीवन मूल्यों में निरन्तर गिरावट आती जा रही है। भौतिक उन्नति वरदान से अधिक अभिशाप सिद्ध हो रही है। भारतीय संस्कृति के मूल आधार संयुक्त परिवार आज टूटते चले जा रहे हैं। जहाँ पर भी संयुक्त परिवार विद्यमान है वहाँ का वातावरण वृद्धों की मानसिक एवं शारीरिक स्थिति के अनुकूल नहीं है। धनोपार्जन की तलाश और शहरी जीवन के मोह में आज युवा पीढ़ी प्रायः नगरों की ओर आकर्षित हो रही है। फलस्वरूप वृद्धों के प्रति उदासीनता बढ़ रही है, उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण ने वृद्धों के लिए गहन समस्या उत्पन्न कर दी है। भारतीय परम्परा यद्यपि बड़े–बूढ़ों के सम्मान में विश्वास करती है, किन्तु नवीन परिस्थितियों में इन मान्यताओं का महत्त्व खत्म होता जा रहा है और वृद्ध व्यक्ति परिवार के लिए बोझ और समस्या बनते जा रहे हैं। गाँवों की अपेक्षा शहरों में यह समस्या उत्तरोत्तर व्यापक होती जा रही है। लेकिन भारतीय ग्रामीण समाज भी इस समस्या से अछूता नहीं है।

नई पीढ़ी अपने पैरों पर खड़े होते ही वृद्धजनों को अनुपायोगी और भार स्वरूप समझने लगती है। छोटी उम्र से ही उनके अनुशासन में रहना उन्हें अच्छा नहीं लगता। जिन वृद्ध माता–पिता के हाथों में आर्थिक संसाधन केन्द्रित है वहाँ निहित स्वार्थों के कारण वातावरण कुछ भिन्न है। इसके विपरीत जो माता–पिता सन्तान पर आश्रित हैं उनके प्रति श्रद्धा सत्कार तो दूर की बात है प्रायः कर्त्तव्य की भावना भी दृष्टिगोचार नहीं होती है।

हमारे पितसत्तात्मक भारतीय समाज में वृद्ध महिलाओं की स्थिति अत्यंत चुनौतीपूर्ण एवं चिंता का विषय है।

सदियों से चलती आ रही लैंगिक असमानताओं के कारण महिलाओं पर पुरूषों का प्रभुत्व वृद्धावस्था में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जीवन के पूर्व चरणों में ही समानता एवं सुविधाओं से वंचित रहने के कारण वृद्ध महिलाओं को बढ़ती उम्र के साथ अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परिवार की बदलती संरचना एवं संयुक्त परिवार प्रणाली के क्षीण होने से वृद्ध महिलाओं की स्थिति और अधिक कमजोर हुई है। वे अक्सर आर्थिक रूप से निर्भर, सामाजिक रूप से अलग–थलग एवं मानसिक रूप से तनाव का अनुभव करती हैं। विशेषतः विधवापन की स्थिति में उनकी समस्याएँ और गम्भीर हो जाती हैं, जहाँ उन्हें परिवार में कम महत्व दिया जाता है और उन्हें पूर्णतः दूसरों पर निर्भर होना पड़ता है। वृद्ध महिलाओं को न केवल उम्र भेदभाव बल्कि लिंग भेदभाव का भी सामना करना पड़ता है। स्वास्थ्य, आर्थिक सुरक्षा एवं सामाजिक सहायता की कमी उनके जीवन को और अधिक कठिन बना देती है। अशिक्षा एवं जागरूकता की कमी के कारण वे अपने अधिकारों एवं सरकारी योजनाओं का पूर्ण लाभ भी नहीं उठा पाती हैं।

इस प्रकार, वृद्ध महिलाओं की समस्याएँ केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक मुद्दा हैं, जिनके समाधान के लिए गम्भीर अध्ययन एवं प्रभावी नीतियों की आवश्यकता है।

साहित्य का पुनरावलोकन

राजेश कुमार (2008) ने अपनी पुस्तक ''भारत में वद्धावस्था और सामाजिक परिवर्तन'' में वद्धजनों की बढ़ती संख्या एवं उनकी समस्याओं का विश्लेषण किया है। उन्होंने बताया कि आधुनिकीकरण एवं शहरीकरण के कारण परिवारिक संरचना में परिवर्तन हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप वृद्धजनों की देखभाल में कमी आ रही है।

विमला लाल (2010) ने अपनी पुस्तक 'वृद्धावस्था का सच' में वृद्धों की समस्याओं का विस्तार से विश्लेषण किया है। उन्होंने वृद्धावस्था को एक गम्भीर सामाजिक समस्या के रूप में प्रस्तुत किया है, जहाँ वृद्ध व्यक्ति को जीवन के अंतिम चरण में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि परिवारों में संरचनात्मक परिवर्तन, जैसे संयुक्त परिवारों का टूटना और एकल परिवारों की वृद्धि ने वृद्धों की स्थिति को और अधिक जटिल बना दिया है।

सुनीता वर्मा (2011) ने अपनी पुस्तक ''वद्धजन एवं परिवार'' में वद्धजनों की परिवारिक भूमिका, सम्मान एवं समर्थन पर प्रकाश डाला है। उन्होंने उल्लेख किया है कि परिवार में वृद्धजनों की भूमिका धीरे–धीरे कम हो रही है, जिससे उनका सामाजिक सम्मान प्रभावित हो रहा है।

संजीव कुमार मिश्रा, रवि शंकर और सी.पी. मिश्रा (2012) ने अपने अध्ययन ''सोशल सपोर्ट एण्ड हैल्थ स्टेट्स ऑफ द जेरिऐट्रिक पॉप्यूलेशन इन अरबन वाराणसी'' में वृद्धजनों की स्थिति का विश्लेषण किया है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि वृद्धजन शारीरिक समस्याओं की अपेक्षा मानसिक समस्याओं से अधिक ग्रस्त हैं। अध्ययन के अनुसार, इसका प्रमुख कारण परिवार द्वारा वृद्धजनों को बोझ के रूप में देखना और उनके प्रति उपेक्षित व्यवहार है। इससे उन्हें मानसिक तनाव, अकेलापन तथा अपर्याप्त सामाजिक समर्थन का सामना करना पड़ता है। लेखकों ने यह भी सुझाव दिया है कि वृद्धजनों की स्थिति में सुधार हेतु उन्हें अतिरिक्त स्वास्थ्य सुविधाएं, पारिवारिक सहयोग और सामाजिक समर्थन की आवश्यकता है। साथ ही, सरकार को भी उनके हित एवं कल्याण संबंधी नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन करने के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

राकेश सिंह (2013) ने अपनी पुस्तक ''वद्धजन की समस्याएँ एवं कल्याण'' में वद्धजनों की आर्थिक, सामाजिक एवं मानसिक समस्याओं का विस्तार से वर्णन किया है। उन्होंने यह बताया कि वृद्धजनों के कल्याण के लिए सरकारी एवं गैर–सरकारी प्रयास आवश्यक हैं।

अरूण कुमार (2014) ने अपने शोध–पत्र ''वृद्धजन की सामाजिक स्थिति का अध्ययन'' (इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क) में वृद्धजनों की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया है। उन्होंने बताया कि वृद्धजनों को सामाजिक अलगाव एवं अकेलापन का सामना करना पड़ता है।

कमल मेहला (2015) ने अपने लेख ''वद्धजन की सामाजिक सुरक्षा का अध्ययन'' में वद्धजनों की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया है। उन्होंने बताया कि वृद्धजनों को समाज एवं परिवार दोनों ही स्तरों पर दोयम दर्जे का व्यवहार सहना पड़ रहा है, जिसके कारण उन्हें उपेक्षित व्यवहार महसूस होता है। इस स्थिति का प्रभाव उनकी जीवनशैली पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जहाँ निरंतर बढ़ते तनाव, मानसिक दबाव और आंतरिक दरार उसके प्रमुख पहलू बन गए हैं। उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि वृद्धजनों की सामाजिक सुरक्षा के प्रति

समाज और परिवार दोनों ही स्तरों पर सचेत होने की आवश्यकता है।

संजीव गुप्ता (2018) ने अपने शोध–पत्र ''वृद्धजन की देखभाल में परिवार की भूमिका'' (इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइन्स) में परिवार की भूमिका पर प्रकाश डालता है। उन्होंने यह बताया कि परिवार वद्धजनों के लिए सबसे महत्वपूर्ण समर्थन प्रणाली है।

तथ्य संकलन की पद्धति

प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र वाराणसी शहर निर्धारित है। वाराणसी शहर के सभी 92 वार्डों के सर्वेक्षण कर नियमित अंतराल अंकण विधि के आधार पर 10 वार्डों का चयन किया गया है। इन वार्डों के वरिष्ठ महिलाओं की समग्र सूची बना कर प्रत्येक वार्डों से दैव निदर्शन पद्धति तथा सुविधाजनक निदर्शन पद्धति के नियमित अंतराल अंकण विधि द्वारा 30–30 अर्थात् कुल 300 वरिष्ठ महिलाओं का चयन कर अध्ययन को पूर्ण किया गया है। उत्तरदात्रियों का चयन करते समय निदर्शन को संतुलित एवं प्रतिनिधित्वपूर्ण रखा गया। तथ्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वैतीयक दोनों ही स्त्रोतों से किया गया है। द्वैतीयक स्त्रोतों में मुख्य रूप से पुस्तकों, प्रतिवेदनों एवं जनगणना संबंधी प्रतिवेदनों से भी सूचनाओं का संकलन किया गया है। प्राथमिक तथ्यों का संकलन मुख्य रूप से साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर साक्षात्कार प्रक्रिया द्वारा की गई है। इस पत्र के अन्तर्गत भारत में वृद्ध महिलाओं की परिवारिक भूमिका एवं सामाजिक स्थिति का विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

तालिका– 1

क्र0 सं0	उम्र समूह	संख्या	प्रतिशत
1	60 वर्ष से 65 वर्ष	140	46.66
2	66 वर्ष से 71 वर्ष	75	25.00
3	72 वर्ष से 77 वर्ष	40	13.34
4	78 वर्ष से 83 वर्ष	30	10.00
5	83 वर्ष से अधिक	15	05.00
6	कुल	300	100.00

तालिका 1 से उत्तरदात्रियों के उम्र समूह के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है। तालिका अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कुल उत्तरदात्रियों में से 46.66 प्रतिशत उत्तरदात्री 60 वर्ष से 65 वर्ष के हैं, 25 प्रतिशत उत्तरदात्री 66 वर्ष से 71 वर्ष के हैं, 13.34 प्रतिशत उत्तरदात्री 72 वर्ष से 77 वर्ष के हैं, 10 प्रतिशत उत्तरदात्री 78 वर्ष से 83 वर्ष के हैं, तथा 05 प्रतिशत उत्तरदात्री 83 वर्ष से अधिक उम्र के हैं।

तालिका– 2

क्या पारिवारिक मामलों में आपसे सलाह ली जाती हैं?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	पूर्ण रूप से	148	49.33
2	आंशिक रूप से	89	29.67
3	कुछ कह नहीं सकते	63	21.00
4	कुल	300	100.00

तालिका 2 से स्पष्ट होता है 49.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार पारिवारिक मामलों में उनसे सलाह ली जाती है तथा उनकी सलाह के अनुसार अनुसरण भी किया जाता है, 29.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार पारिवारिक मामलों में उनसे आंशिक रूप से सलाह ली जाती है। यदि सलाह भी ली जाती है तो उस पर ज्यादा अमल नहीं किया जाता है, वहीं 21 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वे इस संबंध में कुछ कह नही सकती कि उनसे पारिवारिक मामलों में सलाह ली जाती है कि नहीं।

तालिका– 3

निर्णय लेने में आप की भूमिका किन–किन क्षेत्रों में है?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	विवाह संबंधी निर्णय लेने में	54	18.00
2	खर्च संबंधी	16	05.33
3	बच्चों की शिक्षा में	04	01.33
4	सगे संबंधियों के विषय में	164	54.67
5	घरेलू कार्यों के निर्धारण में	62	20.67
6	कुल	300	100.00

तालिका 3 से स्पष्ट होता है 18 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार विवाह संबंधी निर्णय लेने में उनकी भूमिका होती है, 05.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार खर्च संबंधी निर्णय में उनकी भूमिका होती है। 01.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार बच्चों की शिक्षा के संबंध में वे निर्णय लेती है, 54.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार संगे संबंधियों के विषय में वे निर्णय लेती है जबकि 20.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार घरेलू कार्यो के निर्धारण में वे निर्णय लेती है।

तालिका – 4

वृद्धावस्था में आपके सामाजिक सम्पर्क व अन्तः क्रिया के दायरे की स्थिति कैसी हैं?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	पहले से सीमित	195	65.00
2	पहले से विस्तृत	16	05.33
3	पहले के समान	89	29.67
4	कुल	300	100.00

तालिका 4 से स्पष्ट होता है 65 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वृद्धावस्था में उनकी सामाजिक सम्पर्क व अन्तः क्रिया के दायरे की स्थिति पहले से सीमित हो गई है, 05.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वृद्धावस्था में उनकी सामाजिक सम्पर्क व अन्तः क्रिया के दायरे की स्थिति पहले से विस्तृत हो गई है, जबकि 29.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वृद्धावस्था में उनकी सामाजिक सम्पर्क व अन्तः क्रिया के दायरे की स्थिति पहले के समान ही है।

तालिका – 5

क्या आपके दृष्टिकोण से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर व्यक्ति को परिवार में अपेक्षाकृत अधिक सम्मान मिलता हैं?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	118	39.33
2	न्हीं	63	21.00
3	कह नहीं सकते	119	39.67
4	कुल	300	100.00

तालिका 5 से स्पष्ट होता है 39.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार उनकी दृष्टिकोण से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर व्यक्ति को परिवार में अपेक्षाकृत अधिक सम्मान मिलता है, 21 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वे ऐसा नहीं मानती कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर व्यक्ति को परिवार में अपेक्षाकृत अधिक सम्मान मिलता है जबकि 39.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वे इस संबंध में कुछ नहीं कह सकती।

तालिका– 6

क्या आप ये अनुभव करती हैं कि आपकी प्रतिष्ठा परिवार में कम होती जा रही है?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	214	71.33
2	न्हीं	86	28.67
3	कुल	300	100.00

तालिका 6 से स्पष्ट होता है कि 71.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार वे अनुभव करती है कि उनकी प्रतिष्ठा परिवार में कम होती जा रही है, जबकि 28.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार उन्हें ऐसा नहीं लगता कि उनकी प्रतिष्ठा परिवार में कम होती जा रही है। बल्कि उनकी प्रतिष्ठा पहले के समान ही है।

तालिका– 7

क्या परिवार में नई पीढी के सदस्यों द्वारा आपको समय दिया जाता है?

क्र0 सं0	अभिमत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	109	36.33
2	न्हीं	191	63.67
3	कुल	300	100.00

तालिका 7 से स्पष्ट होता है कि 36.33 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार परिवार में नई पीढ़ी के सदस्यों द्वारा उनको पूरा समय दिया जाता है, जबकि 63.67 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के अनुसार परिवार में नई पीढ़ी के सदस्यों द्वारा उनको समय नहीं दिया जाता है। यहाँ तक वे उनके पास भी नहीं फटकते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि वृद्धावस्था में व्यक्तियों की परिवारिक एवं सामाजिक स्थिति में स्पष्ट परिवर्तन देखने को मिलता है। अध्ययन में अधिकांश उत्तरदात्रियों की उम्र 60 से 65 वर्ष के बीच पाई गई, जो यह दर्शाता है कि आरंभिक वृद्धावस्था में ही समस्याएँ उभरने लगती हैं। परिवारिक मामलों में सलाह लेने की दृष्टि से देखा जाए तो लगभग आधे उत्तरदात्रियों से पूर्ण रूप से सलाह ली जाती है, किन्तु एक बड़ी संख्या ऐसी भी है जहाँ उत्तरदात्रियों की सलाह को या तो आंशिक रूप से माना जाता है या फिर उन्हें इस प्रक्रिया से दूर रखा जाता है। निर्णय–निर्माण में भूमिका का विश्लेषण बताता है कि वृद्ध व्यक्ति अधिकांशतः संगे संबंधियों एवं घरेलू कार्यो से संबंधित निर्णयों में ही सक्रिय रहते हैं, जबकि आर्थिक एवं शैक्षिक निर्णयों में उनकी भागीदारी बहुत कम होती जा रही है। सामाजिक सम्पर्क के संबंध में यह स्पष्ट हुआ है कि अधिकांश उत्तरदात्रियों के अनुसार वृद्धावस्था में उनका सामाजिक दायरे सीमित होता जा रहा है, जो उनके अकेलापन एवं मानसिक तनाव को बढ़ावा देता है। इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि अधिकांश वृद्ध व्यक्ति यह अनुभव करते हैं कि परिवार में उनकी प्रतिष्ठा धीरे–धीरे कम होती जा रही है। साथ ही नई पीढ़ी के सदस्यों द्वारा समय न दिए जाने की समस्या भी गम्भीर रूप से उभरकर सामने आती है।

इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि वृद्धावस्था में परिवारिक सम्मान, निर्णय–निर्माण में भागीदारी एवं सामाजिक सम्पर्क में गिरावट देखी जा रही है, जो उन्हें मानसिक रूप से प्रभावित करती है। अतः आवश्यक है कि परिवार एवं समाज दोनों स्तरों पर वृद्धजनों के प्रति सम्मान, समर्थन एवं सहभागिता को बढ़ावा दिया जाए ताकि उनका जीवन गुणवत्तापूर्ण एवं संतोषजनक बन सके।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ

1. देसाई, आई.पी. (1956): द ज्वाइन्ट फैमिली इन इंडिया : एन एनॉलेटिकल, सोशियल बुलेटिन, भोल्यूम–5।
2. कुमार, राजेश (2008): ''भारत में वृद्धावस्था और सामाजिक परिवर्तन'', नई दिल्ली : राजेश पब्लिशर्स।
3. लाल, विमला (2010): ''वृद्धावस्था का सच'', नई दिल्ली : अशोक प्रकाशन।
4. वर्मा, सुनीता (2011): ''वृद्धजन एवं परिवार'', नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
5. मिश्रा, संजीव कुमार, रवि शंकर एवं मिश्रा, सी.पी. (2012) : ''सोशल सपोर्ट एण्ड हैल्थ स्टेट्स ऑफ दा

जेरिऐट्रिक पॉप्यूलेशन इन अरबन वाराणसी'', इंडियन जर्नल ऑफ प्री. सो. मे0, वो0 43।

6. सिंह, राकेश (2013): ''वृद्धजन की समस्याएँ एवं कल्याण'', नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
7. कुमार, अरूण (2014): ''वृद्धजन की सामाजिक स्थिति का अध्ययन'', इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क, भाग 75, अंक 1।
8. मेहला, कमल (2015): ''वृद्धजन की सामाजिक सुरक्षा का अध्ययन'', जर्नल ऑफ एडवांसेज एण्ड रिर्सचेज इन एलाइड एजुकेशन, वो0 10, नं0 14
9. गुप्ता, संजीव (2018): ''वृद्धजन की देखभाल में परिवार की भूमिका'', इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइन्स, भाग 6, अंक 2।
10. पटेल, कल्पना, (2024): ''वाराणसी शहर की वरिष्ठ महिला नागरिकों की सामाजिक – आर्थिक समस्याएँ एवं समायोजन पर आधारित एक अध्ध्यन'' पी0एच0डी0 थीसिस ऑफ सोश्योलॉजी डिपार्टमेंट, बी0एच0यू0, वाराणसी।

Cite this Article

'कल्पना पटेल', "भारत में वृद्ध महिलाओं की परिवारिक भूमिका एवं सामाजिक स्थिति का विश्लेषण", ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3107-9679 (Online), Volume:2, Issue:2, April-June 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."